Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H.D. Jain College, Ara
M.A semester - 1 Philosophy CC-01
Indian Epistemology & Logic

" Pratyaksha - Definition and Kinds." 1

प्राचीन न्याय के अनुसार —
इन्द्रिय और वस्तु के सम्बन्ध से उत्पन्न ज्ञान को ही प्रत्यक्ष कहते हैं। परन्तु इस परिभाषा में अतिव्याप्ति दोष है।

नव्य-न्याय के अनुसार —
प्रत्यक्ष ही एक ऐसा ज्ञान है जो सीधे बिना किसी व्यवधान के उत्पन्न होता है। इसलिए प्रत्यक्ष-ज्ञान की दूसरी परिभाषा नव्य-नैयायिकों ने दी है —
" बिना किसी दूसरे माध्यम के जो ज्ञान उत्पन्न हो उसे प्रत्यक्ष कहते हैं।"

न्याय शास्त्र के अनुसार
प्रत्यक्ष का वर्गीकरण कई प्रकार से किया गया है, पहले वर्गीकरण के अनुसार प्रत्यक्ष के दो भेद होते हैं —

1. लौकिक प्रत्यक्ष
2. अलौकिक प्रत्यक्ष

यह वर्गीकरण इन्द्रियों के साथ वस्तु के सम्पर्क होने के ढंग को ध्यान में रखकर किया गया है। लौकिक प्रत्यक्ष में इन्द्रिय के साथ वस्तु का सम्पर्क साधारण ढंग से होता है।

किन्तु अलौकिक प्रत्यक्ष का विषय कुछ इस प्रकार का होता है कि साधारण ढंग से इन्द्रियों का उससे सम्पर्क नहीं हो सकता। इन्द्रियों का उससे सम्बन्ध असाधारण ढंग से होता है।

लौकिक प्रत्यक्ष के दो

भेद होते हैं —
(1). बाह्य प्रत्यक्ष
(2) मानस प्रत्यक्ष

चूँकि ज्ञानेन्द्रियों के प्रकार की मानी जाती है आम बाह्य और आन्तरिक अत: इन्द्रियों से सम्बन्धित प्रत्यक्ष के भी ये दो भेद हो जाते हैं। जब बाह्य इन्द्रियों से सम्पर्क होने से विषय का ज्ञान होता है तो उसे बाह्य प्रत्यक्ष कहते हैं और जब आन्तरिक इन्द्रिय या मन से सम्पर्क होने से विषय का ज्ञान होता है तो उसे मानस प्रत्यक्ष कहते हैं।

बाह्य इन्द्रियों की संख्या पाँच हैं — आँख, कान, नाक, त्वचा और जिभ। इनके क्रमश: रूप, शब्द, गंध, स्पर्श और रस पाँच विषय हैं। अत: इन बाह्य इन्द्रियों और विषयों के सम्पर्क से उत्पन्न ज्ञान की संख्या भी पाँच हो जाती है, जो क्रमश: इस प्रकार है — चाक्षुष, श्रौत, स्पार्शन, रासन और घ्राणज।

जैसे — आप के सामने एक आम रखा हुआ है। आप आँखों द्वारा इसके रूप रंग का ज्ञान प्राप्त करते हैं। यह 'चाक्षुष' प्रत्यक्ष कहा जायगा। इसे जब हाथ में लेकर दबाते हैं तो इसे दबाता हुआ और मुलायम पाकर इसके पके होने का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

यह 'घ्राणज' प्रत्यक्ष हुआ। जब जीभ से गाके की मीठेपन का ज्ञान होता है तो यह 'रासन' प्रत्यक्ष हुआ। जब 'त्वक्' पर रखते हैं तो इसके गर्म स्वाद का ज्ञान होता है। यह 'स्पर्शन' प्रत्यक्ष हुआ और जब घंटी के ध्वनि से कर्ण में ध्वनि और तालु के संघर्षण से उत्पन्न शब्द सुनाई पड़ता है तो यह 'श्रौत' प्रत्यक्ष का उदाहरण हुआ।

मानसिक अनुभूतियों (जैसे— सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न) के साथ मन के संयोग होने से जो ज्ञान उत्पन्न होता है उसे मानस प्रत्यक्ष कहते हैं।

इसप्रकार इस वर्गीकरण के अनुसार लौकिक प्रत्यक्ष के छः भेद होते हैं — पाँच बाह्य और एक मानस प्रत्यक्ष।

दूसरी प्रकार से लौकिक प्रत्यक्ष के दो भेद किये जाते हैं —

1. निर्विकल्प प्रत्यक्ष।
2. सविकल्प प्रत्यक्ष।

प्रत्यक्ष का रूप अविकसित रहने पर उसे निर्विकल्प प्रत्यक्ष कहते हैं और विकसित रहने पर सविकल्प प्रत्यक्ष कहते हैं। इस वर्गीकरण में सविकल्प प्रत्यक्ष के एक विशेष रूप 'प्रत्यभिज्ञा' को भी जोड़

के सकते हैं। यहाँ जोड़ दें। इस प्रकार कुल मिलकर हो जाते हैं। लौकिक प्रत्यक्ष के तीन भेद

1. निर्विकल्प - जब हमें किसी चीज का प्रत्यक्ष होता है तो कई बारगी पूरी जानकारी ही हमें उस चीज की नहीं हो आती। प्रथम क्षण में हमें उस वस्तु के अस्तित्व का आभास होता है, उसके विशेष गुणों का ज्ञान नहीं होता। यही निर्विकल्प प्रत्यक्ष की अवस्था है। जैसे - जब हम सिनेमा देखने के लिए दिन के खुले प्रकाश से अन्धकारपूर्ण सिनेमा-घर में प्रवेश करते हैं तो प्रथम कुछ क्षणों तक हमें वहाँ रखी हुई कुर्सियों या बैठे हुए लोगों का स्पष्ट ज्ञान नहीं हो पाता। इनका केवल धुंधला आभास होता है। इसे ही निर्विकल्प प्रत्यक्ष कहते हैं।

2. सविकल्प प्रत्यक्ष में हमें वस्तु का स्पष्ट और निश्चित बोध होता है। हमें केवल वस्तु की जाति (genus) का ही पता नहीं चलता बल्कि उसकी विशेषता (species) भी मालूम होती है, जैसे - मान लीजिए कि आप एक पीपल का पेड़ देख रहे हैं। यहाँ आप केवल वृक्ष जाति को ही नहीं जान रहे हैं बल्कि इसकी

विशेषता गौणता को समावेश नहीं है। इस प्रकार आपको वस्तु का आकार ही प्राप्त होता है क्योंकि प्रकार का ही ज्ञान हो रहा है। इसी को सविकल्पक प्रत्यक्ष कहते हैं। निर्विकल्पक प्रत्यक्ष सविकल्प का आधार होता है। निर्विकल्पक प्रत्यक्ष के बाद ही सविकल्पक का जन्म हो सकता है।

3. प्रत्यभिज्ञा — प्रत्यभिज्ञा का अर्थ है पहचानना। अतीत में देखी गई वस्तु को फिर प्रत्यक्ष होने पर यदि हम उसे पहचान जाते हैं, तो उसे प्रत्यभिज्ञा कहते हैं। जैसे — किसी व्यक्ति को हमने काशी में देखा था और आज फिर हम उसको देखकर पहचान जाते हैं कि यह वही व्यक्ति है, तो इस ज्ञान को प्रत्यभिज्ञा कहते हैं। अतः प्रत्यभिज्ञा की उत्पत्ति में वर्तमान ज्ञान और पूर्व संस्कार ज्ञान दोनों का योग होता है।

प्राचीन न्याय में लौकिक और अलौकिक प्रत्यक्ष का भेद नहीं किया गया है किन्तु नव्य-न्याय में प्रत्यक्ष के लौकिक और अलौकिक ये दो भेद माने जाते हैं। लौकिक प्रत्यक्ष में सामने प्रस्तुत विषयों के साथ इन्द्रिय का साधारण ढंग से सम्बन्ध होता है। किन्तु अलौकिक प्रत्यक्ष के विषय इन्द्रिय के सामने वस्तुतः प्रस्तुत नहीं होते। वे एक असाधारण ढंग से

इन्द्रियों से सन्निकृष्ट होते हैं। इसी असाधारण सन्निकर्ष (अलौकिक सन्निकर्ष) के कारण इस प्रत्यक्ष को अलौकिक प्रत्यक्ष कहते हैं।

अलौकिक प्रत्यक्ष के तीन भेद किये जाते हैं—
(1) सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष।
(2) ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष।
(3) योगज।

सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष के द्वारा हमें किसी जाति का प्रत्यक्ष होता है। नैयायिकों का कहना है कि हम समूची मनुष्य जाति का प्रत्यक्ष एक असाधारण ढंग से होता है, जिसे वे सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष कहते हैं। इनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में उसकी जाति या सामान्य रहता है। जैसे प्रत्येक मनुष्य में मनुष्यत्व नामक सामान्य है। इसी प्रकार प्रत्येक गाय में गोत्व है प्रत्येक घोड़े में अश्वत्व है। अतः जब हम इस व्यक्ति का प्रत्यक्ष करते हैं तो इसके साथ ही हम उसके सामान्य गुण का भी प्रत्यक्ष कर लेते हैं। जैसे कोई बच्चा कौतूहलवश आग छू देता है और उसकी उंगली जलने लगती है। इस प्रकार के अनुभव से ही वह समझ जाता है कि आग में जलन होती है यद्यपि उसने केवल किसी एक विशेष आग का ही प्रत्यक्ष किया,

फिर भी चूँकि प्रत्येक आग्नि में उसका सामान्य (आग्नेयत्व) समवेत रहता है, अतः उसी एक आग्नेय माध्यम से ही सभी देशों और सभी काल की आग्नि का प्रत्यक्ष हो गया। एक आग्नि में जलन का प्रत्यक्ष करने से ही समस्त आग्नि-जाति के जलन का प्रत्यक्ष हो जाता। नैयायिकों के अनुसार व्याप्ति की निश्चयता स्थापना सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष द्वारा ही होती है। इस प्रकार वे आगमन के विरोधाभास से भी बच जाते हैं। अलौकिक सन्निकर्ष द्वारा ही सामान्य या जाति के प्रत्यक्ष की व्याख्या हो सकती है।

(2) ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष एक ऐसा अलौकिक प्रत्यक्ष है जिसमें हमारी इन्द्रियों को अपने साधारण विषयों से भिन्न विषय का भी प्रत्यक्ष होता है। जैसे — हम प्रायः कहते हैं — घास चिकनी दीख पड़ती है, चाय गर्म दीख पड़ती है, चट्टान कठोर दीख पड़ती है, चन्दन सुगन्धित दीख पड़ती है, इत्यादि। अब प्रश्न है कि आँखों द्वारा तो साधारणतया केवल रूप-ज्ञान का ही प्रत्यक्ष हो सकता है। घास, चाय, चट्टान या चन्दन का केवल रूप/रंग ही आँखें बतला सकती हैं। इनके स्पर्श ज्ञान (चिकना, कठोर, गर्म) या गंध ज्ञान (सुगन्धित) को आँखों से कैसे जाना जा सकता है?

इस सम्बन्ध में नैयायिकों का उत्तर है कि अतीत में हमलोगों ने इन दो प्रकार के गुणों का साथ-साथ प्रत्यक्ष

किया है। जब कभी हमने चाहा देखी हैं उनकी भूतानुभूति का स्पर्श भी किया है। इस प्रकार के कारण हम दो प्रकार के विषयों में इतना साहचर्य हो जाता है कि वे एकाकार हो जाते हैं और एक विषय के प्रत्यक्ष से ही दूसरे का भी अनुभव हो जाता है। यह ज्ञान चूंकि पूर्व प्राप्त ज्ञान के आधार पर होता है, इसलिए इसे ज्ञान 'लक्षण' कहते हैं। चूंकि यह साधारणतया सम्भव नहीं है, इसलिए इसे अलौकिक प्रत्यक्ष का एक भेद मानते हैं।

(3.) योगज – हम जानते हैं कि हमारी इन्द्रियों की शक्ति सीमित है। अत्यन्त दूर एवं सूक्ष्म विषयों को साधारणतया हम न देख सकते हैं न सुन सकते हैं, न चख सकते हैं, न सूँघ सकते हैं और न छू सकते हैं। साधारण व्यक्तियों के लिए इस प्रकार का ज्ञान सम्भव नहीं। किन्तु कुछ असाधारण व्यक्तियों में इस प्रकार का ज्ञान पाया जाता है। इसके द्वारा भूत, वर्तमान, भविष्य, सूक्ष्म, दूर सभी प्रकार की वस्तुओं की साक्षात अनुभूति होती है। इसे ही योगज प्रत्यक्ष कहते हैं। ऐसा अलौकिक ज्ञान योगियों को योगाभ्यास द्वारा सिद्ध होता है। इसलिए इस ज्ञान को योगज प्रत्यक्ष कहते हैं।

योगाभ्यास की पूर्णता और अपूर्णता के अनुसार यह ज्ञान

दो प्रकार का होता है, जो योग में पूर्ण सिद्ध हैं, उनके लिए ऐसा ज्ञान शाश्वत और स्वतः होता है। ऐसे व्यक्तियों को युक्त कहते हैं। और जिन्हें केवल आंशिक सिद्धि प्राप्त है, उन्हें इस ज्ञान के लिए ध्यानस्थ होने की आवश्यकता पड़ती है, ऐसे व्यक्ति को 'युञ्जान' कहते हैं। श्रुति तथा अन्यान्य प्रामाणिक ग्रन्थों पर आधारित होने के कारण अधिकांश भारतीय दार्शनिक इसे योगज प्रत्यक्ष की सम्भावना स्वीकार करते हैं किन्तु पाश्चात्य दर्शन में इसके पर बहुत कुछ सन्देह प्रकट किया जाता है।

वेदान्तियों ने योगज प्रत्यक्ष को शास्त्र सम्मत होने के कारण सत्य माना है, यद्यपि प्रथम दो अलौकिक प्रत्यक्षों को वे नहीं मानते। जैन-दर्शन का 'कैवल्य' ज्ञान, बौद्ध-दर्शन का 'बोधि', सांख्य-योग दर्शन का कैवल्य और वेदान्त का साक्षात्कार ये सभी इसी योगज प्रत्यक्ष के ही विविध रूप हैं।